P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

साम्प्रदायिक चेतना ही साम्प्रदायिक हिंसा का कारण

विकास कुमार मिश्रा
शोधार्थी,
जी0बी0 पन्त सोशल साइंस इन्टीट्यूट,
यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद, झूसी, इलाहाबाद, उ0प्र0, भारत

सारांश

सांप्रदायिकता हमारे देश में एक बड़ी समस्या है। इसके पीछे साम्प्रदायिक चेतना का प्रसार के विभिन्न प्रकार धार्मिक एवं कट्टरपंथी संगठनों के द्वारा किया जाता हैं। ये लोगों के दृष्टिकोण को निर्धारित करने के लिए धर्म को एक एजेण्ट की तरह इस्तेमाल करते हैं। इसके माध्यम से साम्प्रदायिकता चेतना के प्रसार का कार्य करते हैं। हालांकि धर्म ही साम्प्रदायिक चेतना के प्रसार के पीछे एक मात्र कारण नहीं है क्योंकि अलग–अलग धर्म के अनुयायी भी साथ–साथ रहते हैं। हमारे देश एवं विशेषकर उत्तर प्रदेश में साझी विरासत देखने को मिलती है। फैजाबाद, गंगा–जमुनी तहजीब का एक केन्द्र रहा है। शोधार्थी यह जानना चाहता है कि धर्म के अतिरिक्त वह कौन–कौन से कारण रहे है जिनके माध्यम साम्प्रदायिक चेतना का प्रसार होता है।

मुख्य शब्द : क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता, धर्म और संस्कृति।

प्रस्तावना

प्रस्तुत लेख के माध्यम से शोधार्थी ''ग्रामीण उत्तर प्रदेश में साम्प्रदायिक चेतना का प्रसार फैजाबाद जिले के विशेष सन्दर्भ में'' विषय पर शोध करना है। प्रेस काउन्सिल ऑफ इण्डिया ने फरवरी 2013 के अपने एक रिपोर्ट में कहा है कि 1990 के बाद से सांप्रदायिक दंगे शहरों से गाँवों की तरफ रूख कर रहे है। इस मानसिकता का अध्ययन आवश्यक है। सांप्रदायिकता हमारे देश में एक बड़ी समस्या है। इसके पीछे साम्प्रदायिक चेतना का प्रसार विभिन्न प्रकार धार्मिक एवं कट्टरपंथी संगठनों द्वारा किया जाता हैं। ये लोगों के दृष्टिकोण को निर्धारित करने के लिए धर्म को एक एजेण्ट की तरह इस्तेमाल करते हैं। इसके माध्यम से साम्प्रदायिकता चेतना के प्रसार का कार्य करते हैं। हालांकि धर्म ही साम्प्रदायिक चेतना के प्रसार के पीछे एक मात्र कारण नहीं है, क्योंकि अलग–अलग धर्म के अनुयायी भी साथ–साथ रहते हैं। हमारे देश एवं विशेषकर उत्तर प्रदेश में साझी विरासत देखने को मिलती है। फैजाबाद, गंगा–जमुनी तहजीब का एक केन्द्र रहा है।

साहित्यावलोकन

साम्प्रदायिकता सत्तासीन तबकों के लिए एक राजनीतिक हथियार है। साम्प्रदायिकता के तौर–तरीकों में बहुत बदलाव आया है। साम्प्रदायिकता ने अब पूरा राजनीतिक दर्शन गढ़ लिया है। इसने फासीवाद व तानाशाही को अपना राजनीतिक लक्ष्य बना लिया है। *सुभाषचन्द्र 2004)*

साम्प्रदायिकता जटिल परिघटना है। इसे सिर्फ समसामयिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में ही नहीं समझा जा सकता। इसकी एक ऐतिहासिक मध्यकालीन एवं आधुनिक पृष्ठभूमि है। इसे समूचे तौर पर समझाने के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। टुकड़ों–टुकड़ों में इसे नहीं समझा जा सकता। साम्प्रदायिक शक्तियां अपने आजकल के कृत्यों को वैधता प्राप्त करने के लिए जड़ें मध्यकाल में तलाशती है। *(इंजीनियर, 2004)*

हमारे देश में फासीवाद सांप्रदायिकता के रूप में सामने आ रहा है। कथित हिंदुत्व का आंदोलन जिस रूप में उभरकर सामने आया है, उसमें वह क्लासिकल अर्थ में अपनी विचारधारा में फासीवादी है, अपने वर्गीय समर्थन में फासीवाद है, अपने तौर–तरीकों में फासीवाद है और अपने कार्यक्रम में फासीवाद है। फासीवाद विचारधारा के सभी घटक यहां मौजूद हैं। ''हिन्दू'' की जबरन यकसां बनायी गयी अवधारणा के अंतर्गत, बहुसंख्यकों को एकजुट करने की कोशिश की जा रही है। इस यकसां बना दिये गये समूह में, अतीत में ऐसे ही यकसां बना दिये गये अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा किये गये कथित अन्यायों के खिलाफ, एक शिकायत खड़ी की जा रही है। इस अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ, सांस्कृतिक श्रेष्ठता की भावना पैदा की जा रही है। *(पटनायक, 1995)*

जातीयता के मामले में संघियों का साफ कहना है कि हिंदुस्तान में राष्ट्र का अर्थ ही हिंदु है। गैर–हिंदु तबकों के लिए यहां कोई स्थान नहीं है।''

मूलगामी विभेद वाली संस्कृतियों और जातियों का मेल हो ही नहीं सकता'' के हिटलरी फार्मूले को वे भारत पर हुबहू लागू कर रहे हैं। उनकी यह साफ राय है कि गैर–हिंदू भारत में रह सकते हैं, लेकिन वे सीमित समय तक तथा बिना किसी नागरिक अधिकार के रहेंगे। गोलवलकर के शब्दों में। *(माहेश्वरी, 1993)*

आज सम्प्रदायवाद वास्तव में क्या ? अकादमिक जगत में इसकी विभिन्न परिभाषाएं गढ़ी गयी हैं। इन परिभाषाओं के अनुसार, सम्प्रदायवाद कहीं तो ''सर्वोपरि, एक विचारधारा'' है, कहीं ''एक मिथ्या चेतना'' है, कहीं ''दुर्लभ साधनों के लिए एक संघर्ष'' और ''नौकरियों के लिए प्रतियोगिता'' है, तो कहीं ''शासक वर्ग की राजनीति का उपकरण'' है। सामान्य रूप में, विलफ्रेड कांदवेल स्मिथ ने इसे ''एक ऐसी विचारधारा'' के रूप में परिभाषित किया है ''जो प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के समूह के एक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक इकाई होने पर, और ऐसे समूहों के बीच भेद पर, यहां तक कि वैर भाव तक पर, बल देती है।'' *(पणिक्कर, 2009)*

भारत में धर्म और जाति अस्मिता निर्माण के सबसे प्रमुख तत्व रहे हैं। औपनिवेशिक शासन ने इसे और भी अश्मीभूत किया। समकालीन भारत में जब भी धर्म आधारित पहचान की चर्चा की जाती है तो साम्प्रदायिकता उसमें सबसे बड़ा मुद्दा होती है। यहीं पर स्पष्ट कर देना चाहिए कि साम्प्रदायिकता एक औपनिवेशिक निर्मिति है जबकि धर्म विभिन्न समुदायों या संस्कृतियों के दैनिक आचार विचार की एक नैतिक व्यवस्था है। औपनिवेशिक शासन ने भारतीय उपमहाद्वीप के धर्मो को एक दूसरे के हित को समाप्त कर अपने हित को आगे बढ़ाने वाले समुदायों के रूप में एक दूसरे के समक्ष खड़ा कर दिया। 1857 के विद्रोह के बाद इस प्रक्रिया को औपनिवेशिक शासन ने सायास बढ़ाया फलस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से साम्प्रदायिक दंगों की एक श्रृंखला वर्तमान काल तक चली आयी है। देश किसका है और इसका स्वरूप क्या होगा? क्या यह धर्म आधारित होगा?इसका नाम क्या होगा ? इस बात को लेकर दंगे हुए। हिन्दी राष्ट्रभाषा होगी कि उर्दू या फारसी प्रचलन में होगी इसको लेकर दंगे हुए। संविधान सभा में एक समुदाय विशेष की बड़ी संख्या को भय में बदला गया फिर 1946 में भीषण कत्ले–आम किया गया। भारत और पाकिस्तान बनने के बाद देश में दंगे हुए । देश की राजनीति और शक्ति पर एकाधिकार और देश के स्वरूप को अपनी सुविधानुसार ढालने के लिए 1992 के बाद तो दंगों की एक नयी श्रृंखला ही चल पड़ी। दंगे की आग रह–रह कर भड़क उठती है। इस दौरान कुछ जाने–पहचाने तरीके प्रयोग में आते हैं तो कुछ सर्वथा नये तरीके और प्रतीक उभरते हैं।

आजादी की लड़ाई के दौरान, संविधान सभा की बहसों और संविधान के लागू होने के बाद भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाये रखना एक बड़ी चुनौती थी। 1940 के दशक की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके, इसलिए संविधान में भारत को एक धर्म निरपेक्ष, लोकतांत्रिक एवं समाजवादी देश बनाने की वकालत की गयी जिसमें सभी धर्मो, सम्प्रदायों एवं विभिन्न संस्कृतियों को मानने वाले एक साथ सौहार्द पूर्ण ढंग से रह सकें तथा राष्ट्र की मूल आत्मा से अपने को जुड़ा हुआ महसूस कर सकें।

इतिहासकार इरफान हबीब ने बताया है कि भारत में इतिहासकारों का प्रमुख रूप से दो समूह रहा है। एक में प्रमुख इतिहासकार आर.सी. मजूमदार थे जिन्होंने मध्य काल को मुगल भारत तथा प्राचीन काल को हिन्दू भारत कहा है। उनके अनुसार मुगल शासक क्रूर प्रवृत्ति के थे, इनके शासन काल में हिन्दुओं को उत्पीड़ित किया गया ये हमेशा से विदेशी थे। दूसरे समूह के प्रतिनिधि प्रमुख रूप से डी0डी0 कौशाम्बी थे। जिन्होंने मजूमदार से विपरीत बातें कहीं है।

औपनिवेशिक भारत में जो इतिहासलेखन हुआ उसने जाने अनजाने साम्प्रदायिकता के प्रसार में अपनी भूमिका निभाई। आरम्भिक भारत को हिन्दू भारत तथा मध्यकालीन भारत को मुस्लिम भारत कहा जाता रहा। 1950 के पहले के राष्ट्रवादी इतिहास लेखन ने तुर्कों और मुगलों में खोज खोजकर बुराइयाँ दिखाईं। इसी प्रकार कुछ औपनिवेशिक प्रशासक–सह इतिहासकारों ने इस वैमनस्य को आगे बढ़ाया 1909 के मार्ले–मिंटो सुधारों ने साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व को एक वास्तविकता में बदल दिया। सर्वात्रिक वयस्क मताधिकार तो औपनिवेशिक शासन दे नहीं सकता था लेकिन वह अल्पसंख्यक होने के भय और बहुसंख्यक होने के बोध ने भी प्रतिनिधिमूलक राष्ट्र के निर्माण में चुनौतियाँ पेश कीं[1]। साम्प्रदायिकता का आधार ही यह धारणा है कि भारतीय समाज कई ऐसे संप्रदायों में बंटा हुआ है जिनके हित न सिर्फ अलग है बल्कि एक–दूसरे के विरोधी भी है। साम्प्रदायिकता के जन्म के पीछे का विश्वास यह भी है कि राजनीतिक और आर्थिक से लेकर सामाजिक और सांस्कृतिक इरादों के लिए लोगों को सिर्फ धर्म की रस्सी से ही बांधकर किसी सामान्य लक्ष्य की ओर ले जाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में अलग–अलग समुदायों और समूहों के हिन्दू, मुस्लिम, सिख और इसाई सिर्फ धार्मिक ही नहीं बल्कि धर्म से परे मामलों में भी एक निश्चित समूह की तरह आचरण करेंगे क्योंकि उनका धर्म एक है। धर्म से परे इन मामलों राजनीति भी है (चन्द्र 2004)।

आजादी के बाद भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ । देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू देश में एक धर्म निरपेक्ष वादी संस्कृति के निर्माण के बड़े पक्षधर थे। उन्होंने साम्प्रदायिकता का मुखरता से विरोध किया। इस सन्दर्भ में उन्होनें 1954 में ही घोषित किया था, ''मैं भारत में हर चुनाव हारने का तैयार हूँ मगर साम्प्रदायिकता और जातिवाद को कोई कोना नहीं मिलने दूंगा।'' नेहरू समेत अनेक ऐसे उदारवादी व्यक्तित्वों की एक परम्परा ही रही है जो कि साम्प्रदायिकता के खिलाफ एवं धर्म निरपेक्ष संस्कृति के निर्माण की हमेशा वकालत करती रही है। एक दूसरे छोर पर साम्प्रदायिक राजनीति को सक्रिय करने के प्रयास भी सदैव होते रहे हैं(चन्द्र 2004)। 1946 से लेकर 2012 तक साम्प्रदायिक दंगों की एक अबाध श्रृंखला चली आयी है। उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में दंगों की आवृत्ति होती रही है। 1987 में मेरठ के मलियाना में दंगे हुए। 1989 में गोण्डा जिले के कर्नलगंज कस्बे में दंगे हुए

जिसमें एक स्थानीय नेता की भूमिका की बात की जाती रही है। यहाँ दुर्गा पूजा और ताजिये के विवाद के बीच दंगे हुए। मऊ जिला, जो कि साम्प्रदायिक रूप से काफी संवेदनशील जिला माना जाता है। जहाँ पर किसानों एवं सिल्क साड़ी बनाने वाले जुलाहों की काफी आबादी है। जिसमें 80 प्रतिशत हिन्दु एवं 20 प्रतिशत मुस्लिम है। इस जिले में 1969, 1983 1984, 1988, 1990 और 2000 में साम्प्रदायिक दंगे हुए इन दंगे के पीछे कई आर्थिक कारण भी थे। कई गरीब जुलाहे जो हैण्डलूम का काम करते थे वे बड़े व्यापारी और ट्रेडर्स बन गए, जिसके फलस्वरूप वह अब ज्यादा लाभ कमाने लगा था। दो सम्प्रदायों के बीच तात्कालिक तनाव का एक मुख्य कारण था क्योंकि उनके आर्थिक हित आपस में टकरा रहे थे[2]।

6 दिसम्बर 1992 को बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद पूरे देश में साम्प्रदायिक तनाव को देखने को मिला। 1989 से स्पष्ट रूप से दृश्य पिछले तीन वर्षों की घटनाओं ने यकायक इतना भीषण रूप धारण कर लिया । उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के अयोध्या क्षेत्र में स्थित बाबरी मस्जिद को लाखों कारसेवकों ने ढहा दिया। भारतीय उपमहाद्वीप में इसकी आँच बांग्लादेश तक पहुँची। बाबरी मस्जिद के विध्वंस ने देश के मस्तिष्क पर एक स्थायी छाप छोड़ी और इस खतरे को रेखांकित किया कि प्रजातांत्रिक ढंग से चुनी गयी सरकारें भी जानबूझकर देश के धर्मनिरपेक्ष चरित्र को दाँव पर लगा सकती हैं और मन्दिर बनाने के नाम पर चुनाव घोषणा–पत्र तक जारी किये जा सकते हैं। इसे एक प्रमुख चुनावी मुद्दा बनाया जा सकता है। पहले तो इसमें शामिल समूहों ने इस पर खेद व्यक्त किया कि बाबरी मस्जिद का गिरना एक खेदजनक घटना है और कुछ ही दिनों में देश के विभिन्न भागों में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण देखा गया जिसे वोट में बदला जा सकता था तो इस घटना को बहुसंख्यक हिन्दू वीरत्व–व्यंजना में बदल दिया गया। इसके बाद इस प्रकार की जो घटनाएँ हुईं उनमें भी साम्प्रदायिकता के उभार के साथ इस या उस समूह के द्वारा शिकारी या शिकार लोगों को वोट के रूप में देखा गया ।(ग्रेफ 2013)।

कहा गया है कि *आजाद भारत में हिन्दुओं और मुसलमानों के कैलेण्डर आपस में टकरा गये हैं*। वे प्रायः आपस में टकरा जाते हैं जब दुर्गा–पूजा से मुस्लिमों की ताजिया के जुलूस टकरा जाते हैं। स्थानीय स्तर की शत्रुताएँ और बदमाशियाँ कभी कभी घटनाओं को साम्प्रदायिक रूप से ध्रुवीकृत कर देती हैं। वर्ष 2012 में फैजाबाद में ऐसा हुआ कि एक मन्दिर से प्राचीन मूर्तियाँ चोरी हो गयीं। इसका आरोप मुसलमानों पर लगाया गया। इसके बाद दुर्गा पूजा का पर्व आया जिसमें मूर्तियों के ऊपर पत्थर फेंके गये। यह घटनाएँ फैजाबाद शहर में हुईं। इसके बाद ग्रामीण क्षेत्रों में भी हिंसा और साम्प्रदायिक वैमनस्य फैला और दोनों समुदायों के दो लोग मारे गये । इन घटनाओं को में शहर फिर कस्बे और इसके बाद गाँव के गाँव शामिल हो गये। लगभग दो महीने तक स्थितियाँ शांत नहीं हो पायीं। प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया के रिपोर्ट में मुर्तियों के चोरी के बाद बी0जे0पी0 के नेताओं द्वारा भड़काउ भाषण करने और लोगों को उकसाने की बात सामने आयी है मुस्लिमों पर चोरी के आरोप के अफ़वाह की बात भी सामने आयी है। *(पी.सी.आई. रिपोर्ट फरवरी, 2013)*

आरम्भिक अवस्था में सांप्रदायिक चेतना इस तरह कार्य करती है कि वह किसी खास घटना के स्तर पर साम्प्रदायिक हिंसा का रूप ले लेती है। साम्प्रदायिक हिंसा आमतौर पर उस समय उभरती है जब पहले से चली आ रही साम्प्रदायिक चिन्तन की तीब्रता एक खास स्तर तक पहुँच जाती है और साम्प्रदायिक भय, सन्देह और नफरत में वृद्धि के कारण वातावरण दूषित हो जाता है। इसलिए साम्प्रदायिक चेतना बिना हिंसा के भी बनी रह सकती है परन्तु साम्प्रदायिक हिंसा बिना साम्प्रदायिक चेतना या विचारधारा के अस्तित्व में नहीं रह सकती। (चन्द्र, 2000)

साम्प्रदायिक चेतना एक बड़े स्तर पर तथा आरम्भिक एवं बुनियादी स्तर भी काम करता है जबकि साम्प्रदायिक हिंसा मात्र बाहरी लक्षण है। साम्प्रदायिक हिंसा की प्रस्तावना और पूर्वामास (पूर्वाग्रह) के रूप में साम्प्रदायिक चेतना के फैलाने के कार्य को तथा उसकी विचारधारा को आमतौर पर नजरअंदाज किया जाता है, साम्प्रदायिकता का बोध ज्यादातर सिर्फ उसी समय दर्ज किया जाता है जब हिंसा भड़क उठती है। इसलिए साम्प्रदायिक लोग भी मुख्य रूप से साम्प्रदायिक चेतना के प्रसार के कार्य में दिलचस्पी रखते हैं और अनिवार्यतः साम्प्रदायिक हिंसा फैलाने में नहीं। दरअसल जो लोग साम्प्रदायिक हिंसा की प्रेरणा देते है और उसे संगठित करते है उनका मुख्य उद्देश्य व्यापक नरसंहार करना नहीं बल्कि ऐसी स्थिति पैदा करना जो आम जनता का सम्प्रदायीकरण कर दे तथा साम्प्रदायिकता की भावना उनके अंदर चेतना के स्तर पर कार्य करने लगे। (वहीं, चन्द्र 2000)

उत्तर प्रदेश में यह जानना जरूरी है कि वह कौन–कौन सी वजहें रही है, जिसके चलते ग्रामीण क्षेत्र के जनमानस में साम्प्रदायिकता चेतना पैदा करता है। फैजाबाद जो कि यह भारत की गंगा–जमुनी तहजीब का एक प्रमुख केन्द्र रहा रहा है। इस जिले में स्थित बाबरी मस्जिद/राम मन्दिर को केन्द्र में रखकर पिछले दो दशकों में लगातार धार्मिक अस्मिता पर जोर दिया गया है। देश के अन्य भागों में साम्प्रदायिक तनावों के पहले या बाद में अयोध्या को एक रूपक के रूप में इस्तेमाल करने का प्रयास किया जाता है। 2012 में फैजाबाद में पुनः इसी प्रकार के प्रयास किए गए। आजादी के बाद लेकर अब तक ग्रामीण उत्तर प्रदेश में साम्प्रदायिकता चेतना किस अवस्था में रही है विशेषकर फैजाबाद जिले में यह समस्या किस प्रकार से रही है इसका अध्ययन आवश्यक है। साथ ही साथ इसका अध्ययन करना भी आवश्यक है कि धर्म निरपेक्षता के मूल्य इन क्षेत्रों समुचित ढंग से विकसित न हो पाने का क्या कारण रहे है ? विभिन्न समुदायों की साझी विरासत तथा मानवीय मूल्यों की भावना विकसित होने में क्या दिक्कतें है ?

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत इस शोध प्रस्ताव में निम्नलिखित उद्देश्य के साथ अध्ययन किया जाएगा–

1. यह अध्ययन करना कि आर्थिक हितों की टकराहट की वजह से साम्प्रदायिक तनाव क्यों और कैसे फैलता है?
2. यह देखना कि साम्प्रदायिकता चेतना को फैलाने वाले स्थानीय एजेण्ट क्या है ?
3. यह देखना कि लोगों के लिए धर्म एवं धर्मनिरपेक्षता का क्या अर्थ है ?

शोध परिकल्पना

1. साम्प्रदायिक चेतना के प्रसार का केन्द्र कस्बे है जहां से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर यह सम्प्रेषित हो रही है।
2. कुछ स्थानीय राजनैतिक एजेंट भी होते हैं जो कि साम्प्रदायिक चेतना फैलाने का कार्य करते हैं– स्थानीय एजेंट जैसे सार्वजनिक स्थलों पर धार्मिक कियाकलाप, जुलूस, मिथक, मुहावरे, मजाक, सोशल मीडिया आदि।

शोध प्रश्न

1. ग्रामीण क्षेत्रों में साम्प्रदायिक चेतना का प्रसार किस प्रकार से होता है ?
2. ग्रामीण क्षेत्रों में, दैनिक जीवन में लोगों के मन में साम्प्रदायिक भावना कैसे प्रतीत होती है?
3. विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच समभाव या वैरभाव के लिए उत्तरदायी एजेण्ट एवं अभिकर्ता कौन हैं ?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में चुने गये शहर, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों को शामिल किया गया है। इस अध्ययन में प्रस्तुत शीर्षक से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, सरकारी दस्तावेजों, सरकारी अध्ययनों, सरकारी सर्वेक्षणों से प्राप्त आकड़ों, शोधप्रबन्धों का अध्ययन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया। इसके अतिरिक्त इस अध्ययन में भागीदारी आधारित पर्यवेक्षण का प्रयोग किया जाएगा, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों एवं छोटे कस्बों में छोटे–छोटे समूहों के मध्य जाकर प्रश्नावलियों व साक्षात्कार के माध्यम से सूचनाओं को प्राप्त करके, उनकी व्याख्या एवं विश्लेषण किया जाएगा।

साम्प्रदायिकता एक चेतना के तौर पर लोगों के अन्दर कैसे फैलती है। क्या यह स्वतः स्फूर्त होती है? इसको कोई समूह या विचारधारा प्रसारित करती है या स्थानीय परिस्थितियाँ उत्तरदायी होती हैं। वह कौन सा बिंदु होता है जब स्थानीय मुद्दों को प्रादेशिक या राष्ट्रीय स्तर पर एक साम्प्रदायिक प्रश्न बना दिया जाता है। अभी तक इसे एक शहरी प्रश्न माना जाता रहा है और ग्रामीण क्षेत्रों को एक प्रकार से साम्प्रदायिकता से अछूता माना जाता रहा है लेकिन जैसाकि हाल में घटी घटनाएँ दिखाती हैं, साम्प्रदायिक चेतना ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत तेजी से फैल रही है। इसकी प्रक्रिया और प्रभाव को जानने समझने की जरूरत है।

निष्कर्ष

सांम्प्रदायिकता, समकालीन बहुलवादी भारतीय समाज के सामने मौजूद एक बड़ी समस्या है। ये भारतीय संविधान के बुनियादी मूल्यों को को ही चुनौती देती है। भारत ने स्वतंत्रता के बाद एक धर्म निरपेक्ष प्रजातांत्रिक व्यवस्था बनाने का निश्चय किया था। साम्प्रदायिक चेतना के चलते ही हमारा समाज टूटता है जिसके चलते अलग–अलग संप्रदाय के लोगों के बीच में तनाव का महौल उत्पन्न होता है। साम्प्रदायिक चेतना के चलते, किसी खास स्तर पर यह साम्प्रदायिक हिंसा का रूप ले लेती है। जो कि हमारे आंतरिक समाज के लिए बड़ा खतरा है। भारतीय समाज में सांप्रदायिकता की इस समस्या, इसकी अभिव्यक्ति एवं सांप्रदायिक हिंसा का गम्भीरता पूर्वक एक सशक्त समाधान ढूंढना पड़ेगा अन्यथा हमारे देश के आजादी के आंदोलन के विरासत की वह आधार शिला ही ढह जाएगी, जिस पर संविधान निर्माताओं ने एक उदार, धर्म निरपेक्ष, प्रगतिशील, लोकतांत्रिक एवं समाजवादी मुल्क बनाने का सपना देखा था। वर्तमान समय में साम्प्रदायिकता की समस्या के चलते ही समाज में अलग–अलग सम्प्रदायों के बीच भय, अविश्वास, पूर्वाग्रह जैसी समस्यायें देखने को मिलती है जो कि हमारी साझी विरासत, धार्मिक सहिष्णुता एवं धर्म निरपेक्षता के लिए भी एक खतरा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Bhargava, Rajeev (1998) : Secularism and Its Critics (New Delhi : Oxford University Press).*
2. *Brass, P (1997) : Theft of an Idol: Text and context in the Representation of Collective Violence (Princeton : Princeton University Press).*
3. *(2004) : "Development of an Institutionalised Riot System in Meerut City, 1961-1982", Economic & Political Weekly.*
4. *Chakravarti, Uma and nandita Haksar, (1987) : The Delhi Riots: Three Days in the Life of Nation (Delhi : Lancer International).*
5. *Dixit, Prabha (1969) : "Secularism and Communalism : A comment", Economic & Political Weekly.*
6. *(1974) Communalism : A Struggle for power (Hyderabad : Orient Longman).*
7. *Dumon, Louis (1970) : Religion, Political and History of India (Paris : Monton Publishers).*
8. *Engineer, Asghar Ali, (1994) Couses of Communal Riot in the post Paritition period in India.*
9. *Freitag, Sandria (1990) : Collective Action and Comunity : Public Arenas and the Emergence of Communalism in North India (Delhi : Oxford University Press).*
10. *Graff, Violette(2013), Hindu Muslim Riots in India, ii 1986-2011 from the webpage http//www.massviolence.org/article?idarticle=591*
11. *Khan Kaliq Ahamad, (24 October 2012) Report on Faizabad Violence.*
12. *आक्सफोर्ड एडवांस लर्नर्स डिक्शनरी, 2009, पुनमुर्द्रण, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आक्सफोर्ड।*
13. *आस्टिन,ग्रेनविल, द इण्डियन कांस्टीट्यूशनः कार्नरस्टोन ऑव अ नेशन, 1966, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बाम्बे।*
14. *एंथोनी जे परेल , संपा. गाँधीः हिंद स्वराज एंड अदर राइटिंग्स, 2009, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेसः नयी दिल्ली।*
15. *बसु, आचार्य डा0 दुर्गा दास, भारत का संविधान–एक परिचय, आठवां संस्करण, 2002 प्रकाशक बाधवा एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।*

16. चन्द्र, विपिन, आजादी के बाद का भारत, 2009, हिन्दी माध्यम का कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
17. चन्द्र विपिन, साम्प्रदायिकताः एक परिचय, 2004 अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0 लि0) नई दिल्ली।
18. नेहरू, जवाहरलाल ,डिस्कवरी ऑव इण्डिया, 1986, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली,
19. राय, वी0एन0, साम्प्रदायिक दंगे एवं भारतीय पुलिस, 2000,राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली।
20. साम्प्रदायिक समस्याः कानपुर दंगा जाँच समिति की रिपोर्ट, 2008, अनुवाद– दिवाकर, नेशनल बुक ट्रस्टः नयी दिल्ली, ।
21. ज्ञानेन्द्र पाण्डेय ओमनीबस, 2008, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली में संग्रहीत।
22. चन्द्र विपिन, (2000) आधुनिक भारत में विचारधारा और राजनीति, अनामिका पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0लिमिटेड) नई दिल्ली।
23. हबीब इरफान, (2005) इतिहास और विचारधारा, ग्रन्थ शिल्पी इण्डिया, (प्रा0लिमिटेड) नई दिल्ली।
24. इंजीनियर असगर अली, (2007) भारत में साम्प्रदायिकता इतिहास और अनुभव, पुनर्मुद्रण : प्रकाशक इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद।
25. इंजीनियर असगर अली, (2012) धर्म और साम्प्रदायिकता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
26. नसरीन, तसलीमा, (1993) वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
27. पटनायक प्रभात, (1995) हमारे दौर का फांसीवाद. साम्प्रदायिकता और संस्कृति के सवाल में पेज 43, सहमत, नई दिल्ली।
28. माहेश्वरी अरूण, (1993) आर.एस.एस. और उसकी विचारधारा, नेशनल बुक सेन्टर नई दिल्ली।
29. पणिक्कर के.एन., (2009) आज का सम्प्रदायवाद हस्तक्षेप की सार्थकता, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली।

पाद टिप्पणी

1. History and Interpretation Communalism and problems of Histeriography in India , http://www.sacw.net/india-history/ihabib accessed on 6.08.2013
2. K samu, communal Riots 2005 Human Right Documentation, Indian Social Institute, New Delhi